आक्रामकता (Aggression)

आक्रामकता एवं हिंसा एक ऐसा व्यवहार है, जो मनुष्य तथा पशुओं दोनों में पाया जाता है। अतः आक्रामक व्यवहार एक सार्वभौमिक घटना है। इसके अध्ययन में सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने विशेष अभिरुचि दिखलायी है। अलग-अलग सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने इसे भिन्न-भिन्न ढंग से परिभाषित करने की कोशिश किये हैं।

Baron & Byrne, (1987) के अनुसार – "आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार होता है जिसका लक्ष्य दूसरे को क्षति पहुँचाना या घायल करना होता है तथा जिसके बचने के लिए दूसरा व्यक्ति प्रेरित होता है।"

Myers, (1988) के अनुसार – आक्रामकता एक ऐसा शारीरिक या शाब्दिक व्यवहार होता है, जिसका उद्देश्य दूसरे को चोट पहुँचाना होता है।"

Atkinson, Atkinson, Smith & Hilgard (1987) के अनुसार – "आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार होता है, जिसका उद्देश्य दूसरे को शारीरिक रूप से या शाब्दिक रूप से घायल करना होता है या दूसरे के प्रयासों को बाधित करना होता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से आक्रामक व्यवहार के निम्नांकित तथ्य प्राप्त होते हैं –

→ आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार होता है जो जानबूझकर दूसरे को या उसकी संपत्ति को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किया जाता है।

→ आक्रामक व्यवहार में अभिप्राय प्रकट या अप्रकट भी हो सकता है।

→ आक्रामकता में पीड़ित या लक्ष्य व्यक्ति आक्रामक व्यवहार से बचने की कोशिश करता है।

इन विशेषताओं के आधार पर आक्रामक व्यवहार की पहचान आसानी से की जा सकती है।

Scanned with CamScanner

WK 02 • 007-358

07 JANUARY MONDAY

APPOINTMENTS

NOTES

आक्रामकता तथा हिंसा को प्रभावित करने वाले कारक —

समाज मनोवैज्ञानिकों ने आक्रामक व्यवहार को बढ़ाने वाले कुछ कारकों की पहचान की है। इसमें प्रमुख कारक निम्नांकित हैं —

→ उत्तेजन स्तर (Level of Arousal) — मनोवैज्ञानिकों के प्रयोगों से स्पष्ट हुआ है कि उत्तेजन स्तर व्यक्ति में आक्रामकता उत्पन्न करता है। अध्ययनों से पता चलता है कि उत्तेजन के विभिन्न स्रोत जिनका आक्रामकता से सामान्यतः कोई संबंध नहीं होता है, विशेष परिस्थितियों में आक्रामकता उत्पन्न करते हैं। इन स्रोतों में शारीरिक व्यायाम, कुछ प्रकार के चलचित्र, लैंगिक रूप से उत्तेजक चित्र, कोलाहल आदि प्रधान हैं।

→ कुंठित करनेवाला व्यवहार का उद्देश्य (Purpose of frustrating behaviour) — आक्रामकता का एक कारण कुंठा भी है। मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययनों के आधार पर बतलाया है कि कुंठा व्यक्ति में आक्रामकता तभी उत्पन्न करता है जब कुंठा के स्रोत व्यवहार का उद्देश्य भी कुंठा उत्पन्न करने वाला होता है। जैसे — किसी स्वागत कार्यक्रम में एक मुख्य अतिथि 3 घंटे देर से आते हैं और देर होने का कोई ठोस कारण नहीं बताते हैं तो उनके इस व्यवहार से कुंठा उत्पन्न होती है और उनके प्रति आपके मन में आक्रामकता भी उत्पन्न हो जाती है परंतु जब वे देर होने का कोई ठोस कारण बता देते हैं तो इससे कुंठा की मात्रा भी कम हो जाती है।

→ पीड़ित व्यक्ति का कष्ट संकेत — कुछ समाज मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों के आधार पर बतलाया है कि पीड़ित व्यक्ति में कष्ट संकेत को देखकर आक्रामक व्यवहार करने वाला व्यक्ति अपनी आक्रामकता में कमी कर देते हैं क्योंकि इन संकेतों से उनमें दोष भाव उत्पन्न होने लगता है। परंतु कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन में इसके विपरीत परिणाम भी पाया है।

→ वातावरण में उपस्थित संकेत — समाज मनोवैज्ञानिकों ने यह स्पष्ट किया है कि वातावरण में उपस्थित आक्रामकता संकेत

आक्रामकता को उत्पन्न करने तथा उसे तीव्र बनाने में काफी मदद करते हैं। इन लोगों ने ऐसे संकेतों में हथियार जैसे- बंदूक, तलवार, चाकू आदि की उपस्थिति को एक महत्वपूर्ण संकेत बतलाया है, जिससे आक्रामकता में वृद्धि होती है।

→ आक्रामकता संकेत के रूप में व्यक्ति — आक्रामक व्यवहार या आक्रामकता से संबंधित व्यक्ति भी आक्रामकता के लिए संकेत के रूप में प्रभावकारी होते हैं। बर्कोविट्ज एवं उनके सहयोगियों का मानना है कि व्यक्ति का नाम, चेहरा, व्यवसाय, व्यवहार एवं अनेक अन्य वस्तुएँ यदि किसी प्रकार से आक्रामकता से संबंधित होते हैं तो ऐसी परिस्थिति में वे स्वतः आक्रामकता के संकेत रूप में आक्रामकता व्यवहार करने की प्रेरणा देते हैं। सम्भवतः यही कारण है कि किसी कुख्यात अपराधी के नाम से ही व्यक्ति क्रोध एवं आक्रामकता का भाव दिखाने लगता है।

→ मदिरा एवं मादक औषधियों का प्रभाव — अनेक मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से यह स्पष्ट हो गया है कि मदिरा एवं मादक औषधियों के सेवन से भी व्यक्ति में आक्रामक व्यवहार की प्रवृत्ति में वृद्धि होती है अर्थात् आक्रामकता पर मदिरा एवं मादक औषधियों का काफी प्रभाव पड़ता है।

→ तापमान एवं कोलाहल — समाज मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन के आधार पर स्पष्ट किया है कि भौतिक वातावरण भी आक्रामकता में वृद्धि करता है। ग्रिफिट एवं वेइच (1971) ने अपने अध्ययन में पाया कि तापमान में वृद्धि होने पर व्यक्ति में आक्रामकता की प्रवृत्ति तीव्र होती है। कोलाहल के प्रभाव का भी अध्ययन समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया गया है। उच्चस्तरीय कोलाहल से व्यक्ति की आक्रामकता में वृद्धि हो जाती है बशर्ते कि ऐसे व्यक्ति को कोलाहल में रखने से पहले किसी तरह से क्रोधित या उत्तेजित कर दिया गया हो।

→ अवैयक्तिकता (Deindividuation) — अवैयक्तिकता एक ऐसी अवस्था

Scanned with CamScanner

होती है जिसमें व्यक्ति की पहचान विलुप्त होती है। कुछ समाज मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि अवैयक्तिकता से व्यक्ति में आत्मचेतना कम हो जाती है तथा नकारात्मक मूल्यांकन का डर समाप्त हो जाता है। परिणामस्वरूप, व्यक्ति, आवेगशील, समाज विरोधी एवं आक्रामक व्यवहार अधिक करता है।

→ प्रत्यक्ष छेड़-छाड़ (Direct Provocation) — अनेक अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि बच्चों तथा वयस्कों दोनों में प्रत्यक्षतः छेड़-छाड़ करने से भी उनमें आक्रामकता बढ़ जाती है। जीन (1968) ने भी अपने अध्ययन में पाया है कि यदि प्रयोज्यों पर शारीरिक रूप से आक्रमण किया जाता है तो इससे उनमें ऐसे आक्रमण करने वाले व्यक्ति के प्रति आक्रामकता उस परिस्थिति की तुलना में बढ़ जाती है जिसमें उन्हें सिर्फ कुंठित किया जाता है। इस प्रकार, कहा जा सकता है कि प्रत्यक्ष छेड़-छाड़ से आक्रामकता में वृद्धि हो जाती है।

→ व्यक्तित्व कारक — मेगारजी (1966) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है कि एक खास तरह का व्यक्तित्व ही होता है जो प्रायः आक्रामक व्यवहार अधिक दिखलाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को इन्होंने अल्पनियंत्रित आक्रामक (undercontrolled aggressor) की संज्ञा दिया है। भाविक एवं उनके सहयोगियों के अनुसार — वैसे पुरुष अधिक आक्रामक व्यवहार दिखलाते हैं जिनमें एक अतिरिक्त Y क्रोमोसोम होते हैं। वरोन, रसेल एवं आरमर्स (1985) ने अपने अध्ययनों के आधार पर बतलाया है कि टाईप 'A' व्यक्तित्व वाले व्यक्ति टाईप 'B' व्यक्तित्व वाले व्यक्ति की अपेक्षा अधिक आक्रामक व्यवहार दिखलाते हैं।

स्पष्टतः कहा जा सकता है कि आक्रामकता के कई कारक हैं। जो आक्रामक व्यवहार को काफी प्रभावित करते हैं।

Scanned with CamScanner